Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to restore the eecology of Bhalaswa/Moti Lake

श्री हंस राज हंस (उत्तर-पश्चिम दिल्ली): सर, मुझे बोलने का मौका देने के लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ । मैं इसलिए भी आपका धन्यवाद करता हूँ कि माननीय प्रधान मंत्री जी और आपने मौसम की फिक्र की है, पानी की फिक्र की है, पेड़-पौधे लगाने की फिक्र की है ।

सर, कहते हैं कि: - "हमसायादार पेड़ ज़माने के काम आए ।

जब सूखने लगे तो जलाने के काम आए ।

कच्चा समझ कर बेच न देना यह मकान,

शायद कभी यह सर को छुपाने के काम आए ।"

सर, मेरे इलाके में सबसे मशहूर भलस्वा झील है, जिसको मोती झील भी कहते हैं । यह झील कई सालों से बदहाली की मार झेल रही है । झील के चारों ओर गंदगी और खरपतवार उग आए हैं । इतना ही नहीं झील के बीचोंबीच जहां गहरा और साफ-सुथरा पानी हुआ करता था, साइबेरियन बर्ड्स मौसम के हिसाब से आया करते थे, यात्रियों, पर्यटकों और कलाकारों का तो यहां तांता लगा रहता था ।, वहां आज लंबी-लंबी घास और झाड़ियां उग आई हैं । सर, झील के सूखने के कारण अब कुछ जगहों पर पानी दिखाई देता है, लेकिन प्रशासनिक अनदेखी के कारण इस झील का अस्तित्व समाप्त होता दिखाई दे रहा है । झील समय के साथ गायब हो रही है, क्योंकि तटबंध का निर्माण कर इसे यमुना नदी से भी काट दिया गया है । मानसून की बारिश के अलावा, यमुना नदी का पानी मुख्य स्रोत था । इस झील की न तो कोई साफ-सफाई की जाती है और न ही इसकी देख-रेख के लिए कोई भी आगे आता है । केन्द्र सरकार से मेरा अनुरोध है कि मोती झील या भलस्वा झील के अस्तित्व को बचाया जाए । यही मेरी गुजारिश है ।